तीन कविताएं

जड़ें

जड़ें मत खोदो
वे बहुत शरमाती हैं
इतनी पानीदार
कि मारे शरम के
पाताल लोक तक
चली जाती हैं।

ध्रुव शुक्ल

कव्वा उतरा है मुँडेर पर

कव्वा उतरा है मुँडेर पर
और कन्धे पर नाना
एक-दूसरे में दोनों ने
जाने क्या पहचाना।

गर्दन घुमा-घुमा कव्वे को
देख रहा है नाना
कौन आ गया है यह मुझसा
दाना और सयाना।

गर्दन घुमा-घुमा कर कागा
काँव-काँव करता है
हिला-हिला सिर अपना यह भी
हाँव-हाँव भरता है।

एक-दूसरे को बढ़-चढ़कर
दोनों दाँव दिखाएँ
कौन नकल करता अब किसकी
कैसे हम बतलाएँ?

रमेशचंद्र शाह

ज्योतिषी

एक ज्योतिषी सड़क किनारे
पोथी को फैलाकर,
बता रहे थे भाग्य किसी का
ज्योतिष गणित लगाकर।

"अगले वर्ष तुम्हारे घर में
दो बच्चे खेलेंगे,
इसी माह में केतु उदय है
राहु अस्त हो लेंगे।"

"दस दिन में कुनबे का कोई
खो भी जा सकता है,
पर शनि के प्रभाव से घर भी
वापिस आ सकता है।"

तभी एक लड़के ने आकर
कहा ज्योतिषी जी से,
"पुत्र तुम्हारा गिरा कुएँ में
उठो, चलो जल्दी से।"

भाग्य पूछने वालों के सिर
यह सुनकर चकराए,
कैसी ज्योतिष विद्या लेकर
ये पंडित जी आए?

अपने बेटे के भविष्य का
जिनको पता नहीं था,
भाग्य-भविष्य दूसरों का वे
बतला सकते हैं क्या?

निरंकारदेव सेवक